

## विषय-सूची

### ● गत वर्षों के हल प्रश्न-पत्र

### द्वितीय प्रश्न-पत्र

पहला अध्याय	: रबीन्द्र संगीत.....	3-12
दूसरा अध्याय	: दक्षिणी संगीत पद्धति.....	13-18
तीसरा अध्याय	: पाश्चात्य संगीत.....	19-23
चौथा अध्याय	: हिन्दुस्तानी संगीत.....	24-36
पाँचवाँ अध्याय	: ग्रन्थों एवं पुस्तकों पर आधारित.....	37-45
छठा अध्याय	: वाद्य एवं नृत्य अध्ययन.....	46-53
सातवाँ अध्याय	: गुरु-शिष्य परम्परागत अध्ययन.....	54-58
आठवाँ अध्याय	: रागशास्त्र अध्ययन.....	59-71
नवाँ अध्याय	: तालशास्त्र अध्ययन.....	72-76
दसवाँ अध्याय	: सितारशास्त्र अध्ययन.....	77-81
ग्यारहवाँ अध्याय	: नजरुल संगीत.....	82-84
बारहवाँ अध्याय	: लोक-संगीत.....	85-88

### तृतीय प्रश्न-पत्र

#### पहला अध्याय-रबीन्द्र संगीत

3-32

रबीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास, रबीन्द्रनाथ की वंश तालिका, बंगाल का सांगीतिक इतिहास, बंगाल में शास्त्रीय संगीत का प्रसार, बंगाल का लोक संगीत, बंगाल का बाउल कीर्तन एवं टैगोर के राग प्रयोगों में प्रभाव, बंगाल का लोकनृत्य, रबीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य, आकार मात्रिक स्वरलिपि, रबीन्द्रनाथ टैगोर की सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची, टैगोर द्वारा हिन्दुस्तानी राग-रागिनी का प्रयोग, रबीन्द्रनाथ के थाट अथवा मेल, रबीन्द्रनाथ द्वारा देश भक्ति गीत की रचना, रबीन्द्रनाथ पर पाश्चात्य संगीत एवं प्रादेशिक संगीत का प्रभाव, शास्त्रीय संगीत और रबीन्द्र संगीत में मुख्य अन्तर, टैगोर के संगीत की विषयपरक विविधताएँ, टैगोर के गीतिनाट्य एवं नृत्य नाट्य वाल्मीकि प्रतिभा (गीतिनाट्य), कालमृगया, श्यामा, चंडालिका, चित्रांगदा, मायारखेला (गीतनाट्य), प्रकृतिर प्रतिशोध, राजा ओ रानी, विसर्जन, शाप मोचन, गीतांजलि, शान्तिनिकेतन, जोड़ासोंको में टैगोर परिवार का सांस्कृतिक वातावरण, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**दूसरा अध्याय—कर्नाटक संगीत****33–67**

कर्नाटक संगीत, कर्नाटक संगीत में द्वादश स्वर स्थान, प्रकृति तथा विकृति स्वर, बहतर मेलकर्ता, 72 मेलकर्ता कैसे बने ? दक्षिण के नृत्य, देवदासी प्रथा, दक्षिण भारत का लोक संगीत, कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्ध लोक धुनें—राग मालिका, निरवल, तिल्लाना, वर्णम (पदवर्णम, तानवर्णम), पदम्, रागम्, तानम्, पल्लवि, गीत, स्वरजाति, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत के थाट, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत की स्वर पद्धतियाँ, दक्षिण के प्रसिद्ध ग्रन्थ और उनके पुस्तकालय, कर्नाटक संगीत के 10001 रागों का संक्षिप्त विवरण, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**तीसरा अध्याय—पाश्चात्य संगीत****68–73**

पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति, पाश्चात्य शास्त्रज्ञों का भारतीय संगीत में योगदान, प्रमुख वाद्ययंत्र और उनके सुप्रसिद्ध कलाकार, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**चौथा अध्याय—लोक संगीत****74–79**

लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध. विभिन्न प्रान्तों का लोक संगीत (उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब)

संगीत की सुप्रसिद्ध लोक धुनें—बाउल, लावनी, विल्लुपट्टु, झूमर, भटियाली, सारी, भवइया, कजरी, स्वांग, पण्डवानी, भांगड़ा, गरबा, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**पाँचवाँ अध्याय—भारतीय संगीत****80–94**

पारिभाषिक शब्दावली परिचय—नाद, श्रुति, श्रुतियों के रस, श्रुति और चित्त अवस्था, श्रुतियों की जातियाँ, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, राग, तान, वर्ण, अलंकार, गमक, संगीत पारिजातोक्त 20 प्रकार के गमकों के नाम, सैनी घराने के गमकों के नाम, गीति, मसीतखानी गत, रजाखानी गत, गीत, ग्रह, अंश न्यास, वादी, संवादी, सारणा चतुष्टय, षडज पंचम भाव, स्वर संवाद, द्वादश मूर्च्छनावार, उदात्त, अनुदात्त व स्वरित, स्वर सप्तक, सामवेद—गान्धर्ववेद, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**छठा अध्याय—प्रयोगात्मकशास्त्र****95–110**

रागों का वर्गीकरण—ग्राम राग वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण, थाट राग वर्गीकरण, रागांग वर्गीकरण, रागों का समय सिद्धान्त—वादी-सम्वादी रागों का सिद्धान्त, आविर्भाव—तिरोभाव अध्वदर्शक स्वर, भारतीय संगीत में मैलौडी एवं हॉरमोनी का प्रयोग, प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्ध एवं विकृत स्वरों की स्थापना, रामामात्य का श्रुति स्वर विभाजन, शारंगदेव का श्रुति स्वर विभाजन, अहोबल के श्रुति स्वर विभाजन, लोचन का श्रुति स्वर विभाजन, विष्णुनारायण भातखण्डे के श्रुति स्वर विभाजन, पलुस्करजी के श्रुति स्वर विभाजन, भारतीय संगीत के तत्व, भारतीय रागों का विस्तृत अध्ययन, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**सातवाँ अध्याय—गेय विधाएँ तथा उनका क्रमिक विकास****111–122**

प्रबन्ध, ध्रुपद, धमार, तुमरी, टप्पा, तराना, चतुरंग, त्रिवट, वृन्दगान (कोरस), वृन्दवादन (ऑरकेस्ट्रा), जावली, कृति या कीर्तनम, देवनागरी लिपि का ज्ञान, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं उत्कृष्टता, रस निष्पत्ति, मार्गी देशी तालें, भारतीय संगीत की मुख्य तालें, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

**आठवाँ अध्याय—घराना और गायकी****123–130**

घराने का उद्गम एवं विकास, संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग, घराना पद्धति के गुण-दोष, वाणियाँ, घरानों का आधार—महत्व, कार्य एवं विशेषताएँ, संगीत के घरानों का विवरण—गवालियर घराना, आगरा घराना, किराना घराना, दिल्ली घराना, पटियाला घराना, जयपुर व अल्लादियाँ खाँ घराना, वर्तमान संगीत में घरानों की आवश्यकता तथा सम्भावनाएँ, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

<b>नवाँ अध्याय—भारतीय एवं कर्नाटक संगीत के शास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी शास्त्रात्मक परम्परा</b>	<b>131–146</b>
भरत, मतंग, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, अहमद जान 'थिरकुवा' कण्ठे महाराज, सामता प्रसाद, कुदऊ सिंह, एम.एस. सुबुलक्ष्मी, व्यंकटमखी, पं. अहोबल, हृदयनारायण देव, पुरन्दरदास, रामामात्य, शार्ङ्गदेव, श्यामा शास्त्री, गोपालकृष्ण भारती, त्यागराज, पापनासम शिवान, मुत्थुस्वामी दीक्षितर.	
भारतीय संगीतज्ञों के प्रमुख ग्रन्थ—नाट्यशास्त्र, रागतरंगिणी, स्वरमेलकलानिधि, बृहद्देशी, संगीत मकरन्द, सुधाकर, रागमाला, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.	
<b>दसवाँ अध्याय—संगीत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य</b>	<b>147–150</b>
प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी संगीत, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.	
<b>ग्यारहवाँ अध्याय—सौन्दर्यशास्त्र</b>	<b>151–156</b>
सौन्दर्यशास्त्र का उद्गम, सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त, रस सिद्धान्त, रस के अवयव, अनुभव, रस संख्या, वर्ण एवं देवता, स्वर एवं जातियों से रसों का सम्बन्ध, सांगीतिक सौन्दर्यशास्त्र तथा रस में सम्बन्ध, सौन्दर्यशास्त्र की सम्पूर्ण विवेचना का निष्कर्ष, राग-रागिनी चित्र और राग ध्यान, लघुत्तरीय प्रश्नोत्तर.	
<b>बारहवाँ अध्याय—वाद्य/नृत्य</b>	<b>157–165</b>
वाद्यों का इतिहास, तानपूरा तथा उसके उपस्वरों का महत्व, तांडव और लास्य, भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी—कथक, भरतनाट्यम्, कथकलि, मणिपुरी, कुचिपुड़ी, ओडिसी, मोहिनीअट्टम, वस्तुनिष्ठ प्रश्न.	
<b>तेरहवाँ अध्याय—संगीत शिक्षण एवं शोध तकनीक</b>	<b>166–168</b>
संगीत शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता, सामग्री संकलन, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, संगीतात्मक शोध के अन्तर्गत संक्षेपिका, क्षेत्रीय कार्य, संगीत में शोध-प्रविधि.	
<b>चौदहवाँ अध्याय—प्रश्न-पत्र—III (B) (ऐच्छिक/वैकल्पिक)</b>	<b>169–179</b>
सम्प्रदाय, गुरु-शिष्य परम्परा, देवालय संगीत, संगीत उत्सव, सामवेदकालीन संगीत, रामायणकालीन संगीत, महाभारतकालीन संगीत, संगीत और दर्शनशास्त्र, संगीत और विज्ञान, संगीत और समाज, संगीत और संस्कृति, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संगीत की नवीन प्रवृत्तियाँ, संगीत शिक्षण की विधियाँ, अभ्यास, स्तर एवं मनोविज्ञान.	
<b>● शब्दार्थ सूची</b>	<b>180–204</b>